http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2026) वर्ष 6, अंक 10, 48-49

Article ID:674

शीतवर्गीय प्याज की व्यवसायिक उत्पादन तकनीकी

नेहा ठाकुर

पादप कार्यिकी विभाग
कृषि महाविद्यालय, रायपुर
(इं.गां.कृ.वि.)

*अनुरूपी लेखक

नेहा ठाकुर*

परिचय

प्याज एक कंदवर्गीय महत्वपूर्ण मषाले और नगदी फसल का पौधा है। जिसको वानस्पतिक रूप से ***एलियम सेपा*** एवं लिलिएसी परिवार का द्विवार्षिक शाकीय पौधा तथा पतिया बेलनाकार व खोखलाकार और हरी होती है। जाता है जिसका गुणसूत्र संख्या 16 है। इसके कंद को सलाद, रायता बनाने, अचार तैयार करने, चटनी बनाने, सब्जी में डालने तथा पते को हरी सब्जी के रूप में खाने व पकौडे बनाने के लिए उपयोग किया जाता है। प्याज के कंद में तीखापन एलाइल प्रोपाइल डायसल्फाइड पाये जाने से इसके सेवन से रक्तचाप कम करने तथा सर्दी जुकाम कम करने में काफी उपयोगी सिद्ध होती हैं ।

उत्पतिः–

प्याज का उद्भव मध्य एशिया के क्षेत्रों में हुई है। प्याज को ईरान व अफगानिस्तान के ठंण्डी जगहों में भी कंद को तथा हमारे भारत देष के विभिन्न राज्यों जैसे – महाराष्ट्र और छतीसगढ के मैदानों मे सफलतापर्वक उगाया जाता है।



चित्र क्र. 1 प्याज

जलवायु

प्याज शीत ऋतु की फसल है लेकिन अत्यधिक पाला और अत्यधिक गर्मी दानों ही फसल के लिए हानिकारक होते है। कि कंद बनने के लिए लंबे दिन का तापमान 13 से 25 सेंटीग्रेड के बीच आदर्ष माना जाता है।

मिट्टी का चयन

प्याज की खेती के लिए अच्छे जल निकास वाली बलुई दोमट तथा चिकनी मिट्टी जिसमें जीवांष की मात्रा होती हो उपयुक्त मानी जाती है। जिसका पीएच मान 6.0 से 7.5 हो तथा जलभराव और भारी मिट्टी न हो अन्यथा कंद सड़ जायेगें।

खेत की तैयारी

शीतवर्गीय प्याज की व्यवसायिक उत्पादन के लिए भूमि में 250 क्विंटल अच्छे से सडी हुई गोबर की खाद को जुताई के पूर्व मिट्टी में मिला देना चाहिए उसके बाद रोटावेटर हल से 2 से 3 जुताई करके समतल कर लेना चाहिए साथ ही उर्वरक 250 किलोग्राम सुपर फॉस्फेट एवं 45 किलोग्राम पोटेषियम सल्फेट डालना चाहिए।

प्याज की उन्नत किस्में

ठंडी ऋतु के लिए प्याज की उन्नत किस्में इस मौसम में लगानें के लिए प्रमुख है–

1. भीमा शक्ति
2. एग्रीफाउंड लाइट रेड
3. भीमा रेड
4. भीमा शुभ्रा
5. एलोरा गुलाबी और
6. पंचगंगा इत्यादि।

प्रवर्धन विधियां:–

प्याज की व्यवसायिक प्रवर्धन कंद पौधे के द्वारा किया जाता है। प्याज की अच्छी खेती के लिए मान्य स्त्रोत से आधार तथा प्रमाणित बीज को लगाने के लिए उपयोग करें। इन्हें बोने से पहले 2 ग्राम बाचिस्टिन से प्रति किलो बीज को उपचारित कर लेना चाहिए। प्याज की खेती के लिए 12 से 15 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की आवष्यकता होती है। क्यारी में बीज को लगाने के 50 से 60 दिन बाद तैयार पौधे को 10 तथा 15 से.मी. की दूरी पर 3 से 4 से.मी. की गहराई पर मध्य अक्टूबर और मध्य नवंबर में बोना चाहिए।

सिंचाई

प्याज की व्यवसायिक उत्पादन के लिए मौसम के सामान्य होने की स्थिति में 8 से 10 दिन के अंतराल में सिंचाई करना अनिवार्य रूप से करना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन

प्याज की व्यवसायिक उत्पादन के लिए समय–समय पर अवांछनीय पौधे को निराई गुडाई करके निकाल देना चाहिए। इससे पौधे को मिलने वाले खाद और उर्वरक तथा नमी का समुचित रूप से पौधे को मिलने लगेगें जिससे कंद का अकार में बढोतरी होगी ।

कटाई और उपज

ठंडी ऋतु पाले प्याज की रापाइे के 130 और 140 दिनों में फसल तैयार हो जाती है। जब पौधौं की ऊपरी पतियां पीली पड़कर सूखने और गिरने लगें तब खुदाई करनी चाहिए तथा प्रति एकड़ 150 से 200 क्विंटल तक की उपज मिल जाती है।